

प्रीलमिस फैक्ट्स : 11 जून 2018

वशिव महासागर दविस

चर्चा में क्यों?

8 जून को पूरी दुनिया में वशिव महासागर दविस (World Ocean Day) के रूप में मनाया गया। यह दविस महासागरों के प्रतजागरूकता फ़ैलाने के लयि मनाया जाता है।

प्रमुख बदि

- वशिव महासागर दविस मनाए जाने का प्रस्ताव 1992 में रयि डी जेनेरयि में आयोजति 'पृथ्वी ग्रह' नामक फोरम में लाया गया था।
- इसी दनि वशिव महासागर दविस को हमेशा मनाए जाने की घोषणा भी की गई थी। लेकनि संयुक्त राष्ट्र संघ ने इससे संबंधति प्रस्ताव को 2008 में पारति कयिा था और इस दनि को आधिकारकि मान्यता प्रदान की थी।
- पहली बार वशिव महासागर दविस 8 जून, 2009 को मनाया गया था।
- इसका उद्देश्य केवल महासागरों के प्रतजागरूकता फ़ैलाना ही नहीं बल्कि दुनिया को महासागरों के महत्त्व और भवषिय में इनके सामने खड़ी चुनौतयिों से भी अवगत कराना है।
- इस दनि कई महासागरीय पहलुओं जैसे- सामुद्रकि संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग, पारस्थितिकि संतुलन, खाद्य सुरकषा, जैव वविधिता, तथा जलवायु परविरतन आदिपर भी प्रकाश डाला जाता है।

मॉरीशस करेगा वशिव हदि सम्मेलन की मेज़बानी

चर्चा में क्यों?

11वाँ वशिव हदि सम्मेलन 18-20 अगस्त, 2018 तक मॉरीशस में आयोजति कयिा जाएगा। इसका आयोजन वदिश मंत्रालय द्वारा मॉरीशस सरकार के सहयोग से कयिा जाएगा।

प्रमुख बदि

- 11वें वशिव हदि सम्मेलन को मॉरीशस में आयोजति करने का नरिणय सतिंबर 2015 में भारत के भोपाल शहर में आयोजति 10वें वशिव हदि सम्मेलन में लयिा गया था।
- प्रथम वशिव हदि सम्मेलन का आयोजन वर्ष 1975 में नागपुर में कयिा गया था।
- वशिव के अलग-अलग भागों में ऐसे 10 सम्मेलनों का आयोजन कयिा जा चुका है।
- 11वें वशिव हदि सम्मेलन के लयि वदिश मंत्रालय नोडल मंत्रालय है। सम्मेलन के व्यवस्थति एवं नरिबाध आयोजन के लयि वभिन्नि समतियिों गठति की गई है।
- सम्मेलन का मुख्य वषिय "हदि वशिव और भारतीय संस्कृति" है।
- सम्मेलन का आयोजन स्थल "स्वामी वविकानंद अंतर्राष्टरीय सभा केंद्र" पाई, मॉरीशस है।
- सम्मेलन स्थल पर हदि भाषा के वकिस से संबंधति कई प्रदर्शनयिों लगाई जाएंगी।
- परंपरा के अनुरूप सम्मेलन के दौरान भारत एवं अन्य देशों के हदि वदिवानों को हदि के क्षेत्र में उनके वशेष योगदान के लयि "वशिव हदि सम्मान" से सम्मानति कयिा जाएगा।

अब तक संपन्न हुए 10 वशिव हदि सम्मेलनों की सूची

क्रमांक	सम्मेलन	स्थान	सम्मेलन वर्ष
1.	प्रथम विश्व हृदि सम्मेलन	नागपुर, भारत	10-12 जनवरी, 1975
2.	द्वितीय विश्व हृदि सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	28-30 अगस्त, 1976
3.	तृतीय विश्व हृदि सम्मेलन	नई दलिली, भारत	28-30 अक्टूबर, 1983
4.	चतुर्थ विश्व हृदि सम्मेलन	पोर्ट लुई, मॉरीशस	02-04 दिसंबर, 1993
5.	पाँचवाँ विश्व हृदि सम्मेलन	पोर्ट ऑफ स्पेन, ट्रनिडाड एण्ड टोबेगो	04-08 अप्रैल, 1996
6.	छठा विश्व हृदि सम्मेलन	लंदन, यू. के.	14-18 सितंबर, 1999
7.	सातवाँ विश्व हृदि सम्मेलन	पारामारिबो, सूरीनाम	06-09 जून, 2003
8.	आठवाँ विश्व हृदि सम्मेलन	न्यूयार्क, अमेरिका	13-15 जुलाई, 2007
9.	नौवाँ विश्व हृदि सम्मेलन	जोहांसबर्ग, दक्षिण अफ्रीका	22-24 सितंबर, 2012
10	दसवाँ विश्व हृदि सम्मेलन	भोपाल, भारत	10-12 सितंबर, 2015

कैंसर की लड़ाई में एक नया सहयोगी

चर्चा में क्यों?

हाल ही में राष्ट्रीय कैंसर संस्थान (NCI) के अमेरिका के इंटरनेशनल कैंसर प्रोटीजेनोम कंसोर्टियम (ICPC) में शामिल होने के साथ ही भारत इसमें शामिल होने वाला 12 वाँ देश बन गया। यह दुनिया के अग्रणी कैंसर और प्रोटीजेनोमिक शोध केंद्रों के बीच सहयोग के लिये एक मंच है।

प्रमुख बिंदु

- यह पहली बार है जब भारत के शोधकर्त्ता कैंसर ट्यूमर के प्रोटीन और जीन का अध्ययन एक साथ करेंगे।
- दो आशाजनक वजिज्ञानों (प्रोटीमिक्स और जीनोमिक्स) के बीच वलिय का उद्देश्य नई दवाएँ प्राप्त और व्यक्तिगत कैंसर उपचार प्रदान करना है।
- भारतीय टीम में शामिल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, बॉम्बे प्रोटीमिक्स का अध्ययन करेगा और टाटा मेमोरियल अस्पताल, मुंबई (भारत का प्रमुख कैंसर संस्थान) तीन प्रकार के कैंसर यथा स्तन, सरि तथा गर्दन और गरभाशय ग्रीवा के जीनोमिक्स का अध्ययन करेगा।
- एक पायलट परियोजना के रूप में शोधकर्त्ता इन कैंसर में से प्रत्येक समूह के 100 नमूनों का अध्ययन करेंगे।
- यह पहली बार है कि कैंसर ट्यूमर के प्रोटीमिक्स और जीनोमिक्स का अध्ययन एक ही नमूने से किया जाएगा।
- जीनोमिक्स के क्षेत्र में सिस्टम या जीव के अंदर उपस्थिति सभी संभावित जीनों का अध्ययन करना और उनके उत्परिवर्तनों का विश्लेषण करना शामिल है।
- डीएनए, जो आनुवंशिक नरिदेशों का भंडार है एक जटिल प्रक्रिया के माध्यम से प्रोटीन का नरिमाण करता है।
- एनसीआई के अनुसार, पछिले अध्ययनों से पता चला है कि प्रोटीन स्तर पर जीनोमिक परिवर्तन हमेशा मौजूद नहीं होते हैं।
- यह पाँच साल की परियोजना संस्थानों धन प्राप्त कर पायलट चरण को पूरा करने का प्रयास करेगी।

एंटीबैक्टीरियल गुणों वाला प्लास्टिक

चर्चा में क्यों?

मिट्टी में अंतःस्थापित सलिवर नैनोकणों को अब प्लास्टिक के अंदर फ़ैलाने में सफलता हासिल की गई है जिसे नई एंटीमिक्त्रायिल फिलिमों, फिलामेंट्स तथा प्लास्टिक की अन्य वस्तुओं के नरिमाण के लिये भी प्रयोग किया जा सकता है।

प्रमुख बिंदु

- सलिवर नैनोपार्टिकल-एम्बेडेड प्लास्टिक में एस्चेरिचिया कोलाई (Escherchia coli) और स्टाफिलोकॉक्स ऑरयिस (Staphylococcus aureus) जैसे सामान्य बैक्टीरियल रोगजनकों के खिलाफ 99% से अधिक एंटीबैक्टीरियल गतिविधियाँ देखी गई हैं।
- इस शोध में लगभग 10 नैनोमीटर आकार के सलिवर नैनोकणों को लगभग 200-300 नैनोमीटर लंबाई के मिट्टी के कणों पर जमा किया गया था।
- शोधकर्त्ताओं ने इस प्रक्रिया में मॉटमोरीलोनाइट नामक ज्वालामुखी साइटों में पाए गए एक अकार्बनिक मिट्टी का इस्तेमाल किया।

- मट्टि तथा चाँदी का योगिक जिसमें 10% चाँदी उपस्थित थी, को मेल्ट कंपाउंडिंग विधि का प्रयोग करके उच्च घनत्व वाले पालीथिलिन प्लास्टिक में लोड किया गया था।
- इसके बाद उन्होंने नए गठित चाँदी-मट्टि-प्लास्टिक नैनोकोमोसाइट को फलिर्मों, फलिमेंट्स में परिवर्तित कर दिया और इन्हें नमूने में ढाला और जीवाणुरोधी गुणों की जाँच की।
- फलिर्मों और फलिमेंट्स ने ढाले गए प्लास्टिक की तुलना में उच्च गतविधि प्रदर्शित की।
- टीम ने चाँदी के स्थान पर जस्ता और ताँबा जैसे अन्य धातु आयनों की भी कोशिश की।
- इन नैनोकोमोसाइट प्लास्टिक में चाँदी की सामग्री बहुत कम है इसलिये मानव कोशिकाओं के लिये कोई विषाक्तता नहीं है।

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/prelims-fact-11-06-2018>

